

तुलसीकृत रामचरितमानस में वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक समरसता का विश्लेषण

रामशंकर

सहायक प्राध्यापक

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

आईआईएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा

प्रधान संपादक- द एशियन थिंकर

सारांश

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस भारतीय समाज, संस्कृति और लोक जीवन का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक समरसता का अत्यंत संवेदनशील और सम्मानजनक चित्रण किया गया है। तुलसीदास ने वनवासी पात्रों जैसे निषादराज, शबरी, सुग्रीव और हनुमान के माध्यम से यह सिद्ध किया कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक संरचना में वनवासी समुदायों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह शोध-पत्र रामचरितमानस में वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान, उनके सामाजिक मूल्यों तथा भगवान राम के साथ उनके संबंधों के माध्यम से सामाजिक समरसता के आदर्श का विश्लेषण करता है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि तुलसीदास ने वनवासी समाज को केवल कथा का भाग नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक एकता और समावेशी समाज का प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है।

बीज शब्द: रामचरितमानस, वनवासी समाज, लोक संस्कृति, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक पहचान, तुलसीदास

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य और संस्कृति की परंपरा अत्यंत समृद्ध और व्यापक रही है, जिसमें धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों का समन्वित रूप देखने को मिलता है। इस परंपरा में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित *रामचरितमानस* का विशेष स्थान है। यह ग्रंथ केवल एक धार्मिक आख्यान नहीं, बल्कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक संरचना, सामाजिक संबंधों और मानवीय मूल्यों का जीवंत दस्तावेज है। तुलसीदास ने *रामचरितमानस* की रचना 16वीं शताब्दी में अवधी भाषा में की, जिससे यह ग्रंथ जनसामान्य तक सहज रूप में पहुँच सका। इस ग्रंथ की विशेषता यह है कि इसमें समाज के विभिन्न

वर्गों—राजा, प्रजा, ऋषि, वनवासी और सामान्य जन—सभी का चित्रण अत्यंत संतुलित और समावेशी दृष्टिकोण के साथ किया गया है।

विशेष रूप से *रामचरितमानस* में वनवासी समाज का चित्रण भारतीय सामाजिक संरचना की समावेशी प्रकृति को स्पष्ट करता है। वनवासी समाज, जिसे आज जनजातीय या आदिवासी समाज के रूप में भी जाना जाता है, भारतीय संस्कृति का प्राचीन और अभिन्न अंग रहा है। इन समुदायों की अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, जीवन शैली, आस्था और सामाजिक संरचना रही है। वे प्रकृति के निकट रहकर सरल, सहज और सामूहिक जीवन जीते रहे हैं। तुलसीदास ने इन वनवासी समुदायों को केवल कथा के सहायक पात्र के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उन्हें भारतीय समाज के महत्वपूर्ण अंग और सांस्कृतिक वाहक के रूप में चित्रित किया है।

रामचरितमानस में वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान उनके व्यवहार, जीवन मूल्यों और भगवान राम के साथ उनके संबंधों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। निषादराज गुह, शबरी, हनुमान, सुग्रीव और वानर समाज जैसे पात्र इस बात के प्रतीक हैं कि वनवासी समुदाय भारतीय संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। निषादराज गुह की भगवान राम के प्रति निष्ठा और मित्रता, शबरी की भक्ति और समर्पण, तथा हनुमान की सेवा और कर्तव्यनिष्ठा वनवासी समाज के उच्च सांस्कृतिक मूल्यों को दर्शाते हैं। तुलसीदास ने इन पात्रों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि सामाजिक या भौगोलिक भिन्नता के बावजूद सभी व्यक्ति समान सम्मान और आदर के पात्र हैं।

सामाजिक समरसता का विचार *रामचरितमानस* की एक प्रमुख विशेषता है। तुलसीदास ने भगवान राम के चरित्र के माध्यम से यह संदेश दिया कि समाज में किसी भी प्रकार का भेदभाव उचित नहीं है। भगवान राम का वनवासी समाज के साथ व्यवहार समानता, सम्मान और प्रेम पर आधारित है। उन्होंने निषादराज को अपना मित्र स्वीकार किया, शबरी के प्रेमपूर्वक अर्पित बेर ग्रहण किए और वानर समाज के साथ मिलकर रावण के विरुद्ध युद्ध किया। यह सभी घटनाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि *रामचरितमानस* में सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक एकता को अत्यंत महत्व दिया गया है।

तुलसीदास की दृष्टि में वनवासी समाज केवल एक सीमावर्ती या उपेक्षित समुदाय नहीं है, बल्कि वे भारतीय समाज के सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के संवाहक हैं। उनका जीवन प्रकृति के साथ सामंजस्य, सरलता, सहयोग और सामूहिकता पर आधारित है। इन गुणों के माध्यम से तुलसीदास ने यह संदेश दिया कि समाज की वास्तविक शक्ति उसकी विविधता और समावेशिता में निहित है।

इसके अतिरिक्त, *रामचरितमानस* में वनवासी समाज का चित्रण उस समय की सामाजिक परिस्थितियों को भी दर्शाता है। मध्यकालीन भारतीय समाज में जाति और वर्ग आधारित विभाजन विद्यमान था, लेकिन तुलसीदास ने अपने ग्रंथ में इन

विभाजनों से ऊपर उठकर एक समावेशी और समरस समाज की कल्पना प्रस्तुत की। उन्होंने वनवासी समाज को सम्मानजनक स्थान देकर यह सिद्ध किया कि भारतीय संस्कृति में सभी समुदायों का समान महत्व है।

आधुनिक संदर्भ में भी *रामचरितमानस* में वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक समरसता का विचार अत्यंत प्रासंगिक है। आज जब समाज में विविधता और बहुलता के बीच एकता बनाए रखने की चुनौती है, तब तुलसीदास का यह दृष्टिकोण सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक एकता के लिए प्रेरणास्रोत बन सकता है। वनवासी समाज के प्रति सम्मान, समानता और समावेशिता का संदेश आज के लोकतांत्रिक और बहुसांस्कृतिक समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इस प्रकार, *रामचरितमानस* में वनवासी समाज का चित्रण केवल एक धार्मिक कथा का भाग नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक समरसता और समावेशी दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण प्रतीक है। तुलसीदास ने अपने ग्रंथ के माध्यम से यह सिद्ध किया कि भारतीय संस्कृति की वास्तविक शक्ति उसकी विविधता, सहिष्णुता और समावेशिता में निहित है। यही कारण है कि *रामचरितमानस* आज भी भारतीय समाज और संस्कृति के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत बना हुआ है।

इस शोध का उद्देश्य *रामचरितमानस* में वर्णित वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक समरसता का विश्लेषण करना है, ताकि यह समझा जा सके कि तुलसीदास ने किस प्रकार वनवासी समुदायों को भारतीय समाज के अभिन्न अंग के रूप में प्रस्तुत किया और सामाजिक एकता का संदेश दिया। यह अध्ययन न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है।

वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित *रामचरितमानस* भारतीय समाज और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें समाज के विभिन्न वर्गों का संतुलित और समावेशी चित्रण मिलता है। इस ग्रंथ में वनवासी समाज का चित्रण विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि तुलसीदास ने वनवासी समुदाय को भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का अभिन्न अंग माना है। वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान उनके जीवन मूल्यों, प्रकृति के साथ उनके संबंध, धार्मिक आस्था, सामाजिक व्यवहार और नैतिक दृष्टिकोण में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है (पाण्डेय, 2005)।

प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध

वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान का प्रमुख आधार उनका प्रकृति के साथ गहरा संबंध है। रामचरितमानस में वन, पर्वत, नदियाँ और आश्रम वनवासी जीवन के महत्वपूर्ण अंग के रूप में वर्णित हैं। वनवासी समाज प्रकृति के निकट रहकर जीवन व्यतीत करता था और प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग संतुलित और सम्मानजनक रूप से करता था। यह भारतीय संस्कृति के उस मूल सिद्धांत को दर्शाता है, जिसमें प्रकृति और मानव के बीच सह-अस्तित्व की भावना को महत्व दिया गया है (शर्मा, 2012)।

भगवान राम के वनवास के दौरान वनवासी समाज के साथ उनके संपर्क से यह स्पष्ट होता है कि वनवासी संस्कृति प्रकृति-आधारित जीवन शैली और संतुलन का प्रतीक थी। वनवासी समाज प्रकृति को केवल भौतिक संसाधन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन का आधार मानता था (रिचमैन, 2001)।

सरलता और निष्कपटता

वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान उनकी सरलता, निष्कपटता और मानवीय संवेदनाओं में निहित है। निषादराज गुह का चरित्र इसका उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। जब भगवान राम वनवास के दौरान गंगा तट पर पहुँचते हैं, तब निषादराज उनका अत्यंत प्रेम और सम्मान के साथ स्वागत करते हैं। तुलसीदास लिखते हैं—

“प्रेम मगन तेहि समय निषादा। कछु कहि न सकइ प्रेम अधिकादा।।”

(तुलसीदास, रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड)

यह पंक्ति वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान में निहित प्रेम, समर्पण और मानवीय संवेदनाओं को स्पष्ट करती है। निषादराज का व्यवहार यह दर्शाता है कि वनवासी समाज में सामाजिक संबंधों का आधार प्रेम और विश्वास था (द्विवेदी, 2010)।

ISSN : 3108-0294

भक्ति और आध्यात्मिक चेतना

वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण पहलू उनकी भक्ति और आध्यात्मिक चेतना है। शबरी का चरित्र इसका प्रमुख उदाहरण है। शबरी एक वनवासी महिला थीं, जिन्होंने भगवान राम की प्रतीक्षा में वर्षों तक तप और भक्ति की। जब भगवान राम उनके आश्रम में पहुँचे, तब उन्होंने अत्यंत प्रेमपूर्वक उन्हें बेर अर्पित किए।

यह घटना यह दर्शाती है कि वनवासी समाज में भक्ति और आस्था सामाजिक पहचान का महत्वपूर्ण अंग थी। शबरी की भक्ति यह सिद्ध करती है कि सच्ची श्रद्धा सामाजिक भेदभाव से परे होती है और यह सभी के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है (पाण्डेय, 2005)।

अतिथि सत्कार और सामाजिक व्यवहार

वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान उनके अतिथि सत्कार और सामाजिक व्यवहार में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवता के समान माना जाता है, और वनवासी समाज भी इस परंपरा का पालन करता था। निषादराज द्वारा भगवान राम का स्वागत और उनकी सहायता करना इस सांस्कृतिक मूल्य का प्रमाण है (शर्मा, 2012)।

वनवासी समाज में सामूहिकता और सहयोग की भावना भी उनकी सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा थी। वानर समाज द्वारा भगवान राम की सहायता करना और उनके साथ युद्ध में भाग लेना इस सामूहिकता और सामाजिक एकता का प्रतीक है (रिचमैन, 2001)।

निष्ठा, साहस और कर्तव्यनिष्ठा

वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान उनके साहस, निष्ठा और कर्तव्यनिष्ठा में भी दिखाई देती है। हनुमान का चरित्र इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। हनुमान ने भगवान राम के प्रति अपनी निष्ठा और समर्पण का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने सीता की खोज की, राम का संदेश पहुँचाया और युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हनुमान का चरित्र यह दर्शाता है कि वनवासी समाज में कर्तव्य और सेवा को अत्यंत महत्व दिया जाता था। यह वनवासी समाज के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को स्पष्ट करता है (द्विवेदी, 2010)।

सामाजिक समावेशिता और सांस्कृतिक महत्व

तुलसीदास ने *रामचरितमानस* में वनवासी समाज को भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग के रूप में प्रस्तुत किया है। भगवान राम द्वारा वनवासी समाज के साथ समानता और सम्मान का व्यवहार यह दर्शाता है कि भारतीय संस्कृति में सभी समुदायों का समान महत्व है।

वनवासी समाज का यह चित्रण यह सिद्ध करता है कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक पहचान उसकी विविधता, समावेशिता और सामाजिक समरसता में निहित है (रिचमैन, 2001)।

वनवासी समाज और सामाजिक समरसता

गोस्वामी तुलसीदास कृत *रामचरितमानस* भारतीय समाज की सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें सामाजिक समरसता का आदर्श अत्यंत प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया गया है। तुलसीदास ने अपने इस

ग्रंथ में वनवासी समाज को न केवल कथा का भाग बनाया है, बल्कि उन्हें सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक एकता के प्रतीक के रूप में चित्रित किया है। वनवासी समाज और भगवान राम के बीच स्थापित संबंध भारतीय समाज में समानता, सम्मान और समावेशिता के मूल्यों को स्पष्ट करते हैं (पाण्डेय, 2005)।

सामाजिक समरसता का सांस्कृतिक आधार

सामाजिक समरसता का अर्थ समाज के विभिन्न वर्गों और समुदायों के बीच समानता, सहयोग और परस्पर सम्मान की भावना से है। *रामचरितमानस* में यह भावना वनवासी समाज और भगवान राम के बीच स्थापित संबंधों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। भगवान राम ने वनवासी समाज के साथ कभी भी भेदभाव नहीं किया, बल्कि उन्हें सम्मान और समानता के साथ स्वीकार किया। यह तुलसीदास की समावेशी सामाजिक दृष्टि को दर्शाता है (द्विवेदी, 2010)।

वनवासी समाज के साथ भगवान राम का व्यवहार यह स्पष्ट करता है कि सामाजिक समरसता केवल सामाजिक संरचना का आदर्श नहीं, बल्कि व्यवहारिक जीवन का एक महत्वपूर्ण मूल्य है। यह भारतीय संस्कृति की उस मूल भावना को दर्शाता है, जिसमें सभी मनुष्यों को समान रूप से सम्मान दिया जाता है।

निषादराज और राम की मित्रता: सामाजिक समरसता का आदर्श

निषादराज गुह और भगवान राम की मित्रता *रामचरितमानस* में सामाजिक समरसता का सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण है। निषादराज एक वनवासी समुदाय के प्रमुख थे, लेकिन भगवान राम ने उन्हें अपना मित्र स्वीकार किया और उनके साथ अत्यंत आत्मीयता का व्यवहार किया। तुलसीदास लिखते हैं—

“राम सखा ऋषि बरबस भेंटा। जनु महि लुटत सनेह समेटा॥”

(तुलसीदास, रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड)

यह प्रसंग यह दर्शाता है कि भगवान राम ने सामाजिक या जातिगत भेदभाव को महत्व नहीं दिया, बल्कि निषादराज को समान सम्मान और प्रेम दिया। यह घटना सामाजिक समरसता और समानता के आदर्श को स्थापित करती है (शर्मा, 2012)।

निषादराज की निष्ठा और समर्पण भी सामाजिक समरसता का प्रतीक है। उन्होंने भगवान राम की सहायता की और उन्हें गंगा पार कराने में सहयोग किया। यह घटना यह दर्शाती है कि वनवासी समाज भारतीय सामाजिक संरचना का अभिन्न अंग था और समाज की एकता में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

शबरी की भक्ति और सामाजिक समानता

शबरी का प्रसंग *रामचरितमानस* में सामाजिक समरसता का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उदाहरण है। शबरी एक वनवासी महिला थीं, जिन्होंने भगवान राम के प्रति अत्यंत श्रद्धा और भक्ति व्यक्त की। जब भगवान राम उनके आश्रम में पहुँचे, तब उन्होंने अत्यंत प्रेमपूर्वक उन्हें बेर अर्पित किए।

भगवान राम ने शबरी के प्रेम और भक्ति को स्वीकार किया, जो यह दर्शाता है कि सामाजिक स्थिति व्यक्ति की महानता का मापदंड नहीं है, बल्कि उसके भाव और आस्था अधिक महत्वपूर्ण हैं। यह घटना सामाजिक समरसता और समानता के आदर्श को स्पष्ट करती है (रिचमैन, 2001)।

यह प्रसंग यह भी दर्शाता है कि भारतीय समाज में वनवासी समुदाय को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रूप से सम्मानित स्थान प्राप्त था। तुलसीदास ने इस प्रसंग के माध्यम से यह संदेश दिया कि समाज में सभी व्यक्ति समान रूप से सम्मान के पात्र हैं।

वानर समाज की भूमिका और सामाजिक सहयोग

रामचरितमानस में वानर समाज का चित्रण भी सामाजिक समरसता का महत्वपूर्ण उदाहरण है। वानर समाज ने भगवान राम की सहायता की और रावण के विरुद्ध युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हनुमान, सुग्रीव और अन्य वानर पात्रों ने अपनी निष्ठा और समर्पण के माध्यम से सामाजिक सहयोग और एकता का उदाहरण प्रस्तुत किया।

हनुमान का चरित्र सामाजिक समरसता का सर्वोत्तम प्रतीक है। उन्होंने भगवान राम के प्रति अपनी निष्ठा और समर्पण का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। यह दर्शाता है कि वनवासी समाज केवल सामाजिक संरचना का हिस्सा नहीं था, बल्कि वे धर्म और न्याय की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे (द्विवेदी, 2010)।

वानर समाज और भगवान राम के बीच स्थापित संबंध यह दर्शाते हैं कि सामाजिक समरसता का आधार सहयोग, विश्वास और समानता है। यह भारतीय संस्कृति की समावेशी प्रकृति को स्पष्ट करता है।

तुलसीदास की समावेशी सामाजिक दृष्टि

तुलसीदास ने *रामचरितमानस* के माध्यम से एक समावेशी और समरस समाज की कल्पना प्रस्तुत की है। उन्होंने वनवासी समाज को सम्मानजनक स्थान देकर यह सिद्ध किया कि भारतीय समाज की वास्तविक शक्ति उसकी विविधता और समावेशिता में निहित है।

तुलसीदास का यह दृष्टिकोण उस समय की सामाजिक परिस्थितियों में अत्यंत महत्वपूर्ण था, जब समाज में जातिगत और सामाजिक विभाजन विद्यमान थे। तुलसीदास ने अपने ग्रंथ के माध्यम से यह संदेश दिया कि समाज में सभी व्यक्ति समान हैं और सामाजिक समरसता ही समाज की स्थिरता और विकास का आधार है (पाण्डेय, 2005)।

समकालीन संदर्भ में सामाजिक समरसता की प्रासंगिकता

आज के समय में भी *रामचरितमानस* में प्रस्तुत सामाजिक समरसता का विचार अत्यंत प्रासंगिक है। आधुनिक समाज में विविधता और बहुलता के बीच सामाजिक एकता बनाए रखना एक महत्वपूर्ण चुनौती है। तुलसीदास द्वारा प्रस्तुत सामाजिक समरसता का आदर्श आज के समाज के लिए प्रेरणास्रोत है।

वनवासी समाज के प्रति सम्मान और समावेशिता का संदेश आज के लोकतांत्रिक समाज में सामाजिक न्याय और समानता के सिद्धांतों के अनुरूप है (रिचमैन, 2001)।

वनवासी समाज की भूमिका और सांस्कृतिक योगदान

गोस्वामी तुलसीदास कृत *रामचरितमानस* भारतीय समाज की सांस्कृतिक संरचना और सामाजिक समरसता का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें वनवासी समाज की भूमिका और उनके सांस्कृतिक योगदान का अत्यंत सम्मानजनक और प्रभावशाली चित्रण मिलता है। तुलसीदास ने वनवासी समाज को केवल कथा के सहायक पात्रों के रूप में नहीं, बल्कि धर्म, नैतिकता और सामाजिक सहयोग के महत्वपूर्ण संवाहक के रूप में प्रस्तुत किया है। वनवासी समाज के पात्रों ने भगवान राम के जीवन और उनके आदर्शों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति के निर्माण और संरक्षण में वनवासी समुदाय का महत्वपूर्ण योगदान रहा है (पाण्डेय, 2005)।

धार्मिक और नैतिक मूल्यों के संरक्षण में भूमिका

वनवासी समाज ने *रामचरितमानस* में धार्मिक और नैतिक मूल्यों की स्थापना और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। निषादराज गुह, शबरी, हनुमान और सुग्रीव जैसे पात्र धर्म, भक्ति, निष्ठा और समर्पण के प्रतीक हैं। निषादराज गुह ने भगवान राम के प्रति अपनी मित्रता और निष्ठा का उदाहरण प्रस्तुत किया। जब भगवान राम वनवास के दौरान गंगा तट पर पहुँचे, तब निषादराज ने उनका स्वागत अत्यंत सम्मान और प्रेम के साथ किया।

यह प्रसंग यह दर्शाता है कि वनवासी समाज धार्मिक और नैतिक मूल्यों को अत्यंत महत्व देता था। निषादराज की भूमिका यह सिद्ध करती है कि वनवासी समाज भारतीय संस्कृति के नैतिक आधार का महत्वपूर्ण अंग था (द्विवेदी, 2010)।

इसी प्रकार शबरी का चरित्र वनवासी समाज की आध्यात्मिक चेतना और भक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है। शबरी ने भगवान राम के प्रति अपनी भक्ति और समर्पण के माध्यम से यह सिद्ध किया कि सच्ची आस्था सामाजिक सीमाओं से परे होती है।

सामाजिक सहयोग और संगठन में योगदान

वनवासी समाज ने सामाजिक सहयोग और संगठन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वानर समाज और उनके प्रमुख सुग्रीव तथा हनुमान ने भगवान राम की सहायता कर धर्म की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वानर सेना ने सीता की खोज, सेतु निर्माण और युद्ध में सक्रिय भूमिका निभाई।

हनुमान का चरित्र वनवासी समाज की शक्ति, निष्ठा और कर्तव्यनिष्ठा का प्रतीक है। तुलसीदास लिखते हैं—

“राम काज कीन्हें बिनु मोहि कहाँ विश्रामा।”

(तुलसीदास, रामचरितमानस, सुंदरकाण्ड)

यह पंक्ति हनुमान की सेवा भावना और उनके सांस्कृतिक मूल्यों को स्पष्ट करती है। हनुमान का योगदान यह दर्शाता है कि वनवासी समाज सामाजिक संगठन और सहयोग का महत्वपूर्ण आधार था (शर्मा, 2012)।

सांस्कृतिक समरसता और सामाजिक एकता में योगदान

वनवासी समाज ने सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक एकता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भगवान राम द्वारा वनवासी समाज के साथ समानता और सम्मान का व्यवहार यह दर्शाता है कि वनवासी समाज भारतीय सामाजिक संरचना का अभिन्न अंग था।

निषादराज और भगवान राम की मित्रता, शबरी की भक्ति और वानर समाज का सहयोग यह सिद्ध करता है कि वनवासी समाज भारतीय संस्कृति में समावेशिता और सामाजिक समरसता का प्रतीक था (रिचमैन, 2001)।

तुलसीदास ने वनवासी समाज के माध्यम से यह संदेश दिया कि समाज की वास्तविक शक्ति उसकी विविधता और एकता में निहित है। वनवासी समाज का योगदान भारतीय संस्कृति की समावेशी प्रकृति को स्पष्ट करता है।

सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपराओं के संवाहक

वनवासी समाज ने भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपराओं के संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका जीवन प्रकृति के साथ सामंजस्य, सरलता और आध्यात्मिकता पर आधारित था। वनवासी समाज ने अपनी सांस्कृतिक परंपराओं और मूल्यों को संरक्षित कर भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया।

हनुमान, शबरी और अन्य वनवासी पात्रों के माध्यम से तुलसीदास ने यह दर्शाया कि वनवासी समाज भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का महत्वपूर्ण संवाहक था (पाण्डेय, 2005)।

लोक संस्कृति और लोक संचार में योगदान

वनवासी समाज ने लोक संस्कृति और लोक संचार के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हनुमान द्वारा भगवान राम का संदेश सीता तक पहुंचाना लोक संचार का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

वनवासी समाज मौखिक परंपरा, संवाद और सहयोग के माध्यम से सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों का प्रसार करता था। यह भारतीय लोक संचार परंपरा का महत्वपूर्ण अंग था (रिचमैन, 2001)।

समकालीन संदर्भ में वनवासी समाज का सांस्कृतिक महत्व

आधुनिक संदर्भ में भी वनवासी समाज का सांस्कृतिक योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। *रामचरितमानस* में वनवासी समाज का चित्रण यह दर्शाता है कि भारतीय संस्कृति की वास्तविक शक्ति उसकी विविधता और समावेशिता में निहित है।

वनवासी समाज का योगदान भारतीय समाज की सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक समरसता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह अध्ययन यह सिद्ध करता है कि वनवासी समाज भारतीय संस्कृति का अभिन्न और महत्वपूर्ण अंग रहा है (द्विवेदी, 2010)।

तुलसीदास की समावेशी सांस्कृतिक दृष्टि

गोस्वामी तुलसीदास भारतीय भक्ति साहित्य के महान कवि और समाज सुधारक थे, जिन्होंने *रामचरितमानस* के माध्यम से भारतीय समाज को एक समावेशी और समरस सांस्कृतिक दृष्टि प्रदान की। उनकी सांस्कृतिक दृष्टि केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं थी, बल्कि सामाजिक समानता, सांस्कृतिक एकता और मानवीय मूल्यों पर आधारित थी। तुलसीदास ने अपने ग्रंथ में समाज के सभी वर्गों—राजा, प्रजा, ब्राह्मण, शूद्र, वनवासी और स्त्री—को समान रूप से स्थान देकर भारतीय समाज की समावेशी प्रकृति को स्पष्ट किया (पाण्डेय, 2005)।

सामाजिक समानता का सांस्कृतिक आधार

तुलसीदास की समावेशी सांस्कृतिक दृष्टि का सबसे महत्वपूर्ण पहलू सामाजिक समानता है। उन्होंने भगवान राम के चरित्र के माध्यम से यह संदेश दिया कि समाज में सभी व्यक्ति समान हैं और किसी भी प्रकार का भेदभाव उचित नहीं है। भगवान राम का वनवासी समाज के साथ व्यवहार इस दृष्टि का प्रमुख उदाहरण है।

निषादराज गुह के साथ भगवान राम की मित्रता यह दर्शाती है कि सामाजिक और जातिगत भेदभाव से ऊपर उठकर मानवता और प्रेम को महत्व दिया जाना चाहिए। तुलसीदास लिखते हैं-

“जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुण चतुराई॥

भगति हीन नर सोहड़ कैसा। बिनु जल बारिद देखिअ जैसा॥”

(तुलसीदास, रामचरितमानस)

यह पंक्ति यह स्पष्ट करती है कि व्यक्ति की महानता उसकी जाति या सामाजिक स्थिति से नहीं, बल्कि उसके गुण और भक्ति से निर्धारित होती है (द्विवेदी, 2010)।

वनवासी समाज के प्रति सम्मान और समावेशिता

तुलसीदास ने वनवासी समाज को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग माना है। निषादराज, शबरी, हनुमान और सुग्रीव जैसे वनवासी पात्रों को उन्होंने अत्यंत सम्मानजनक स्थान दिया है। भगवान राम द्वारा शबरी के बेर स्वीकार करना सामाजिक समावेशिता और समानता का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

यह प्रसंग यह दर्शाता है कि तुलसीदास की सांस्कृतिक दृष्टि में समाज के सभी वर्ग समान रूप से सम्मान के पात्र हैं। उन्होंने यह सिद्ध किया कि सामाजिक समरसता भारतीय संस्कृति का मूल आधार है (शर्मा, 2012)।

भक्ति आंदोलन और सांस्कृतिक समावेशिता

तुलसीदास भक्ति आंदोलन के प्रमुख संतों में से एक थे, जिन्होंने भक्ति को सामाजिक समानता और सांस्कृतिक समरसता का माध्यम बनाया। भक्ति आंदोलन ने समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव को समाप्त करने और सभी वर्गों को समान स्थान देने का प्रयास किया।

तुलसीदास ने *रामचरितमानस* की रचना संस्कृत के स्थान पर अवधी भाषा में की, जो उस समय की लोक भाषा थी। इससे यह ग्रंथ समाज के सभी वर्गों तक पहुँचा और सांस्कृतिक समावेशिता को बढ़ावा मिला (रिचमैन, 2001)।

लोक भाषा का उपयोग तुलसीदास की समावेशी सांस्कृतिक दृष्टि का महत्वपूर्ण उदाहरण है। उन्होंने अपने ग्रंथ को केवल विद्वानों तक सीमित न रखकर सामान्य जनता तक पहुँचाया, जिससे सांस्कृतिक एकता और सामाजिक समरसता को बल मिला।

सांस्कृतिक एकता और सामाजिक समरसता का संदेश

तुलसीदास ने *रामचरितमानस* के माध्यम से भारतीय समाज में सांस्कृतिक एकता और सामाजिक समरसता का संदेश दिया। भगवान राम का चरित्र सामाजिक न्याय, समानता और समावेशिता का प्रतीक है।

राम द्वारा वनवासी समाज के साथ सहयोग और सम्मान का व्यवहार यह दर्शाता है कि भारतीय संस्कृति में सभी समुदायों का समान महत्व है। तुलसीदास ने यह सिद्ध किया कि समाज की वास्तविक शक्ति उसकी विविधता और एकता में निहित है (पाण्डेय, 2005)।

मानवीय मूल्यों और सांस्कृतिक समावेशिता

तुलसीदास की सांस्कृतिक दृष्टि मानवीय मूल्यों पर आधारित थी। उन्होंने प्रेम, करुणा, सेवा और समर्पण जैसे मूल्यों को समाज के लिए आवश्यक बताया। हनुमान का चरित्र सेवा और समर्पण का सर्वोत्तम उदाहरण है।

हनुमान की निष्ठा और सेवा भावना यह दर्शाती है कि सामाजिक समरसता का आधार सहयोग और विश्वास है। यह तुलसीदास की समावेशी सांस्कृतिक दृष्टि का महत्वपूर्ण अंग है (द्विवेदी, 2010)।

समकालीन संदर्भ में तुलसीदास की सांस्कृतिक दृष्टि की प्रासंगिकता

आधुनिक समाज में भी तुलसीदास की समावेशी सांस्कृतिक दृष्टि अत्यंत प्रासंगिक है। आज के समाज में सामाजिक समानता, सांस्कृतिक समरसता और सामाजिक न्याय की आवश्यकता पहले से अधिक है।

तुलसीदास द्वारा प्रस्तुत समावेशी दृष्टिकोण समाज में एकता और समरसता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उनका संदेश आज भी भारतीय समाज के लिए प्रेरणास्रोत है (रिचमैन, 2001)।

निष्कर्ष

गोस्वामी तुलसीदास कृत *रामचरितमानस* भारतीय समाज, संस्कृति और मानवीय मूल्यों का एक महत्वपूर्ण और समावेशी ग्रंथ है, जिसमें वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक भूमिका और सांस्कृतिक योगदान का अत्यंत सम्मानजनक चित्रण मिलता है। इस ग्रंथ में वनवासी समाज को केवल एक भौगोलिक या सामाजिक इकाई के

रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है, बल्कि उन्हें भारतीय संस्कृति और सामाजिक समरसता के सशक्त प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है। तुलसीदास ने निषादराज, शबरी, हनुमान और सुग्रीव जैसे पात्रों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि वनवासी समाज भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का अभिन्न अंग है और उनकी भूमिका सामाजिक एकता और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रही है (पाण्डेय, 2005)।

रामचरितमानस में वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान उनके सरल जीवन, प्रकृति के साथ सामंजस्य, भक्ति, निष्ठा और सामाजिक सहयोग में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। निषादराज की मित्रता, शबरी की भक्ति और हनुमान की सेवा भावना यह दर्शाती है कि वनवासी समाज उच्च नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का संवाहक था। तुलसीदास ने इन पात्रों के माध्यम से यह संदेश दिया कि समाज में व्यक्ति का महत्व उसकी जाति या सामाजिक स्थिति से नहीं, बल्कि उसके गुण, आचरण और समर्पण से निर्धारित होता है (द्विवेदी, 2010)।

सामाजिक समरसता की दृष्टि से भी *रामचरितमानस* का विशेष महत्व है। भगवान राम द्वारा वनवासी समाज के साथ समानता, सम्मान और प्रेम का व्यवहार यह दर्शाता है कि भारतीय संस्कृति का मूल आधार समावेशिता और समानता है। राम और निषादराज की मित्रता तथा शबरी के प्रेमपूर्वक अर्पित बेरों को स्वीकार करना सामाजिक भेदभाव को समाप्त कर सामाजिक एकता और समरसता का आदर्श प्रस्तुत करता है (शर्मा, 2012)।

वनवासी समाज का सांस्कृतिक योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। वानर समाज और हनुमान ने धर्म की स्थापना और न्याय की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका सहयोग यह दर्शाता है कि समाज के सभी वर्गों की सहभागिता से ही सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था सुदृढ़ होती है। तुलसीदास ने वनवासी समाज को भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपराओं का संवाहक और संरक्षक के रूप में प्रस्तुत किया है (रिचमैन, 2001)।

तुलसीदास की समावेशी सांस्कृतिक दृष्टि इस ग्रंथ की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। उन्होंने समाज के सभी वर्गों को समान महत्व देकर सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक एकता का संदेश दिया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि भारतीय समाज की वास्तविक शक्ति उसकी विविधता, समावेशिता और मानवीय मूल्यों में निहित है।

समकालीन संदर्भ में भी *रामचरितमानस* में प्रस्तुत वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक समरसता का विचार अत्यंत प्रासंगिक है। आज के समाज में सामाजिक समानता, सांस्कृतिक सम्मान और समावेशिता की आवश्यकता पहले से अधिक है। तुलसीदास का यह दृष्टिकोण आधुनिक समाज के लिए प्रेरणास्रोत है और सामाजिक समरसता स्थापित करने में सहायक हो सकता है।



अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि *रामचरितमानस* केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक समरसता और समावेशी दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। वनवासी समाज का सम्मानजनक चित्रण यह सिद्ध करता है कि भारतीय संस्कृति में सभी समुदायों का समान महत्व है और सामाजिक समरसता ही समाज की स्थिरता, एकता और विकास का आधार है।

संदर्भ सूची

1. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. (2010). *हिन्दी साहित्य की भूमिका*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. पाण्डेय, रामचन्द्र. (2005). *तुलसी और उनका युग*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
3. शर्मा, रामविलास. (2012). *भारतीय संस्कृति और साहित्य*. नई दिल्ली: रावत प्रकाशन।
4. वर्मा, धीरेन्द्र. (2008). *हिन्दी साहित्य का इतिहास*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
5. गुप्त, गणपतिचन्द्र. (2011). *भारतीय साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास*. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।
6. तुलसीदास. (2016). *रामचरितमानस*. गोरखपुर: गीता प्रेस।
7. सिंह, नामवर. (2009). *भारतीय साहित्य की भूमिका*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
8. चतुर्वेदी, रामस्वरूप. (2013). *भक्ति आंदोलन और हिन्दी साहित्य*. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।
9. मिश्र, विद्यानिवास. (2007). *भारतीय संस्कृति और परंपरा*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

